www.navabharat.com/epaper

नवभारत रविवारीय

रविवार, 22 नवंबर 2026



रविवारीय पर अपने सुझाव और रचनाएं हमें भेजें इस पते पर...
Instagram: @navabharat_
Facebook: @Nava Bharat

बज उठी शहनाइयां

तुलसी-शालिग्राम के विवाह से इंस्टावेडिंग तक

चार महीने की चुप्पी के बाद शहनाइयां फिर गूंज उठी हैं. देवउठनी एकादशी पर भगवान विष्णु के जागने की मान्यता के साथ तुलसी-शालिग्राम विवाह संपन्न हुआ और अब मांगलिक कार्यों का सिलसिला शुरू हो गया है. यानी बैंड-बाजा-बारात की वापसी हो चुकी है. फर्क बस इतना है कि इस बार घोड़ी के साथ ड्रोन भी है और फेरों से पहले लाइट-कैमरा-एक्शन भी.

दूल्हा-दुल्हन भी, कंटेंट क्रिएटर भी

- सबसे बड़ा बदलाव युवाओं ने किया है. उनके लिए शादी सिर्फ रस्म नहीं, एक 'एक्सपीरियंस' है: थीम क्या होगी, लोकेशन कैसी होगी, कैमरे में कैसी दिखेगी. कैट के आकलन में शादी के बजट का 1 से 2 प्रतिशत अब कंटेंट और सोशल मीडिया कवरेज पर जाता है. ऑनलाइन निमंत्रण मंचों और एआई-आधारित प्लानिंग टूल की शादी से जुड़ी मांग भी 20 से 25 प्रतिशत बढ़ी है.
- कार्ड की जगह ई-इन्विटेशन आ गया, और एलबम की जगह रील. दिलचस्प यह है कि जिस पीढ़ी पर दिखावे का आरोप लगता है, वही शादी में जल्दबाजी नहीं करती. नमूना पंजीकरण प्रणाली (एसआरएस) की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं की शादी की औसत उम्र 23.1 साल हो गई है, शहरों में 24.4 और गांवों में 22.6 साल. केरल में यह 25.1 और कर्नाटक में 24.8 साल है.
- महिलाओं में 18 साल से पहले शादी सिर्फ 2.1 प्रतिशत की हुई, 24.5 प्रतिशत की 18 से 20 के बीच और 73.5 प्रतिशत की 21 या उससे ऊपर की उम्र में. यानी आज का दूल्हा-दुल्हन पढ़ा-लिखा, कमाऊ और अपनी पसंद का मालिक है. मुहूर्त पंचांग तय करता है, पर 'क्या, कैसे और कितना' वह खुद.

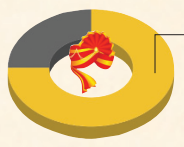
रील्स और प्री-वेडिंग शूट का दबाव

- शादी के बजट का 1 से 2 प्रतिशत अब कंटेंट और सोशल मीडिया पर खर्च होता है. प्री-वेडिंग शूट, ड्रोन शॉट और रील अब 'जरूरी' मानी जाने लगी हैं.
- **जरा रुककर तीन बातें सोचें:** शूट का बजट पहले तय हो; मेहमानों की तस्वीरें और वीडियो डालने से पहले उनकी सहमति ली जाए; और फेरों के दौरान कैमरे से ज्यादा आंखें एक-दूसरे पर रहें.

शादी का बजट और इंडस्ट्री

कैट के 2024 के अनुमान में 10 लाख शादियां 3 लाख रुपये वाली, 10 लाख शादियां 6 लाख रुपये वाली, 10 लाख शादियां 10 लाख रुपये वाली, 10 लाख शादियां 15 लाख रुपये वाली और 7 लाख शादियां 25 लाख रुपये वाली थीं. ऊपरी छोर पर एक करोड़ रुपये से ज्यादा की शादियां भी हैं. पिछले सीजन में कारोबार का सबसे बड़ा हिस्सा जेवर (15 प्रतिशत) और कपड़े (10 प्रतिशत) का रहा. बाकी हिस्सा केटरिंग, डेकोर, होटल-वेन्यू, यात्रा और उपहार में बंटा. मेहंदी आर्टिस्ट, वेडिंग प्लानर और डेकोर स्टार्टअप इस मौसम की नई कमाई वाली भूमिकाएं हैं.

खरीदारी में उत्पादों का योगदान



70% से ज्यादा

बाजार की रौनक, रोजगार की बहार

कैट का अनुमान है कि पिछले सीजन में डेकोरेटर, केटरर, फूलवाले, कलाकार, ट्रांसपोर्टर और होटल स्टाफ के लिए करीब 1 करोड़ अस्थायी या अंशकालिक रोजगार बने और सरकार को करीब 75,000 करोड़ रुपये का जीएसटी व अन्य कर मिला. शहनाइयां लौट आई हैं. सवाल है कि वे आपकी धुन पर बजेंगी या दूसरों को दिखाने की धुन पर.

दिखावा कम, मायने ज्यादा

तीन नए चलन चर्चा में हैं. माइक्रो-वेडिंग में गिनती के मेहमान होते हैं, इंटीमेट वेडिंग में सिर्फ करीबी रिश्तेदार और दोस्त, ताकि हर मेहमान से दो बातें हो सकें. सस्टेनेबल वेडिंग में फूल-पत्तों की सजावट, डिस्पोजेबल की जगह बरतन, डिजिटल निमंत्रण और बचा खाना जरूरतमंदों तक पहुंचाने की पहल शामिल है. मकसद है दिखावा कम, मायने ज्यादा.

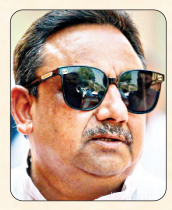




शादी को लेकर हर किसी की कुछ न कुछ ख्वाहिशें होती हैं. उसी तरह मेरी भी बहुत सारी ख्वाहिशें हैं, लेकिन वे महंगी चीजों या बड़े-बड़े इंतजामों से जुड़ी नहीं हैं. मेरी शादी खूबसूरत और यादगार हो, सादगी के साथ. घर के लोग हों, अपने रिश्तेदार हों, हंसी-खुशी का माहौल हो और हर कोई इस दिन को दिल से एंजॉय करे. न दिखावे की होड़ हो और न ही बेवजह का तामझाम.
-अंशिका पांडेय, असि. प्रोफेसर (मणिपाल यूनिवर्सिटी, जयपुर)



मैं अपनी शादी बिल्कुल सिंपल तरीके से करना चाहता हूं. जितना बजट हो, उसी में खुशी-खुशी शादी हो जाए. मेरे लिए शादी में खर्च से ज्यादा रिश्ते की अहमियत है. मैं चाहता हूं कि मेरी लाइफ पार्टनर ऐसी हो जो मेरी सोच को समझे, मेरे साथ हर परिस्थिति में खड़ी रहे. मुझे महंगी शादी नहीं, एक अच्छी जीवनसाथी चाहिए, क्योंकि शादी एक दिन का समारोह नहीं, बल्कि पूरी जिंदगी का साथ है.
-आलोक दुबे, एएसआई (बिहार पुलिस)

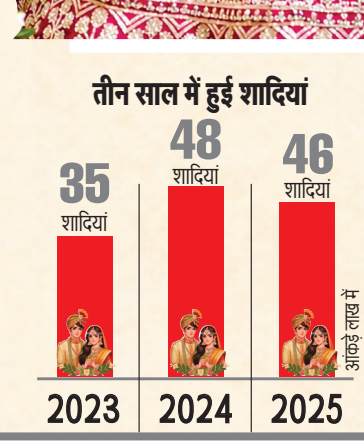


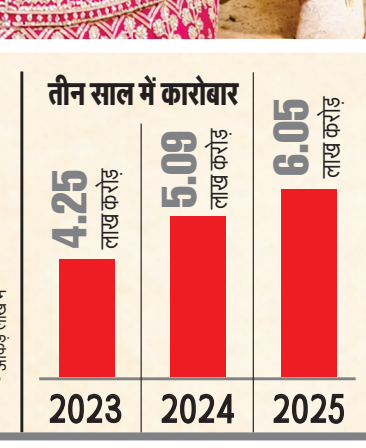
इस शादी सीजन में देशभर में करीब 46 लाख शादियां होने का अनुमान है, जिनसे लगभग 6.50 लाख करोड़ रुपये का कारोबार हो सकता है. शादी अब केवल पारिवारिक आयोजन नहीं, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को गति देने वाला बड़ा बाजार बन चुकी है. शादी उद्योग में पारंपरिक भव्यता के साथ नए ट्रेंड भी जगह बना रहे हैं.
-प्रवीण खंडेलवाल, महामंत्री, 'कैट'



शादी में दिखावे का दबाव अब कई स्तरों पर काम करता है. परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा और परंपरागत अपेक्षाएं आज भी शादी को भव्य बनाने में बड़ी भूमिका निभाती हैं. वहीं, सोशल मीडिया ने इस दबाव को और बढ़ा दिया है. दिखावे का दबाव केवल परिवार की ओर से नहीं, बल्कि समाज, सोशल मीडिया और युवाओं की आकांक्षाओं के मेल से बन रहा है.
-पारुल भंडारी, एलीट शादियों की शोधकर्ता

आप कैसी शादी करना पसंद करेंगे?
अपने विचार हमारे फेसबुक या इंस्टाग्राम पेज पर जरूर साझा करें.
Instagram: @navabharat_
Facebook: @Nava Bharat





शादी के बजट का नया ट्रेंड

1-2% कंटेंट पर खर्च

20-25% डिजिटल मांग में वृद्धि

2025 में अनुमानित शादियां **46** लाख

अनुमानित कारोबार **6.5** लाख करोड़

चीन को क्यों चाहिए एनवीडिया की चिप?

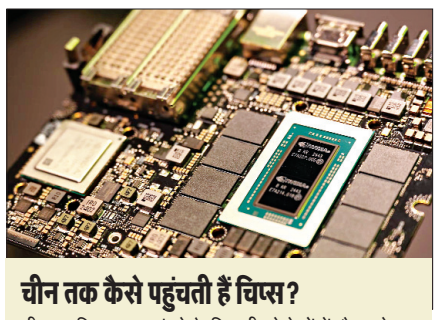
टेक टॉनिक

अमेरिकी पाबंदियों के बावजूद चीन कैसे जुटा रहा है अत्याधुनिक चिप्स? समझिए एआई की दुनिया में जीपीयू की भूमिका, इसकी कार्यप्रणाली और अमेरिका-चीन के बीच छिड़ी तकनीकी जंग.

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई की दुनिया में अब मुकाबला सिर्फ बेहतर सॉफ्टवेयर बनाने का नहीं, बल्कि उसे चलाने वाली कंप्यूटिंग ताकत हासिल करने का भी है. यही वजह है कि अमेरिका और चीन के बीच तकनीकी प्रतिस्पर्धा का बड़ा केंद्र एनवीडिया की चिप्स बन गई हैं.

क्या है एनवीडिया की चिप और क्यों है खास?
एनवीडिया अमेरिकी कंपनी है, जो ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट यानी जीपीयू बनाती है. शुरुआत में इनका इस्तेमाल कंप्यूटर गेम में तस्वीरों और त्रिआयामी ग्राफिक्स को बेहतर बनाने के लिए होता था. बाद में पता चला कि जीपीयू एक साथ हजारों गणितीय गणनाएं कर सकता है. इसे ऐसे समझिए. सीपीयू यानी कंप्यूटर का मुख्य प्रोसेसर किसी काम को क्रम से निपटाने में माहिर होता है, जबकि जीपीयू हजारों छोटे काम एक साथ कर सकता है.

कैसे काम करती है यह तकनीक? जब चैटजीपीटी जैसा एआई मॉडल तैयार किया जाता है, तो उसे किताबों, वेबसाइटों, तस्वीरों और दूसरे डिजिटल डेटा से प्रशिक्षित किया जाता है. इसके लिए अरबों-खरबों गणनाएं करनी पड़ती हैं. जीपीयू इन गणनाओं को समानांतर तरीके से पूरा करता है, जिससे प्रशिक्षण का समय कम होता है.एआई में इसके दो प्रमुख इस्तेमाल हैं. पहला, ट्रेनिंग यानी मॉडल को विशाल डेटा से सिखाना. दूसरा, इन्फरेंस यानी उपयोगकर्ता के सवाल का जवाब तैयार करना. दोनों प्रक्रियाओं में शक्तिशाली कंप्यूटिंग की जरूरत होती है.



चीन तक कैसे पहुंचती हैं चिप्स?

चीन इन चिप्स तक पहुंचने के लिए तीसरे देशों में मौजूद डेटा सेंटर की कंप्यूटिंग क्षमता किराये पर ले सकता है. इसके अलावा कुछ नेटवर्क बिचौलियों और दूसरे देशों की कंपनियों के जरिये चिप्स खरीदने की कोशिश करते हैं. कुछ मामलों में फर्जी कंपनियों और तस्करी के रास्तों का भी इस्तेमाल किए जाने की खबरें आती रही हैं.

सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर की चुनौती: एनवीडिया की एक बड़ी ताकत उसका क्यूडा सॉफ्टवेयर प्लेटफॉर्म है. इसकी मदद से डेवलपर जीपीयू पर एआई से जुड़ी गणनाएं कर सकते हैं. सिर्फ चिप बना लेना पर्याप्त नहीं है, उसके साथ काम करने वाला सॉफ्टवेयर, मेमोरी और नेटवर्किंग तकनीक भी जरूरी होती है. चीन की हुआवेई के एस्केंड प्रोसेसर इस दिशा में विकल्प बन रहे हैं, लेकिन एनवीडिया की तकनीकी बढ़त अभी बड़ी चुनौती है.

आगे क्या? एआई की अगली पीढ़ी में मुकाबला सिर्फ बेहतर मॉडल बनाने का नहीं, बल्कि कम लागत में ज्यादा कंप्यूटिंग क्षमता हासिल करने का होगा. एनवीडिया की चिप्स पर चीन की निर्भरता और अपनी चिप तकनीक विकसित करने की उसकी कोशिश इसी प्रतिस्पर्धा का हिस्सा है.

समझिए

क्या टैबलेट बन सकता है लैपटॉप?

कॉलेज के नोट्स हों या फ्रीलांस प्रोजेक्ट की डेडलाइन, बैग में भारी लैपटॉप ढोना किसे पसंद है? एक समय था जब टैबलेट को मोबाइल और लैपटॉप के बीच का गैजेट माना जाता था, जिस पर फिल्म देखी जाती थी या किताब पढ़ी जाती थी. अब तस्वीर बदल चुकी है. बड़ी स्क्रीन, तेज प्रोसेसर और कीबोर्ड-माउस के सपोर्ट ने इसे कामकाजी डिवाइस बना दिया है. तो सवाल यह है कि यह बदलाव कैसे होता है, और कहां तक चलता है.



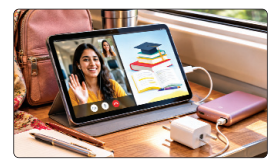
कीबोर्ड और माउस जोड़िए

ब्लूटूथ से वायरलेस कीबोर्ड और माउस जुड़ते ही टैबलेट लैपटॉप की चाल चलने लगता है. उसे स्टैंड पर टिकाइए, कीबोर्ड सामने रखिए, और आपका मिनी लैपटॉप तैयार. ईमेल, रिपोर्ट, असाइनमेंट और ऑनलाइन क्लास अब आराम से निपट जाते हैं.



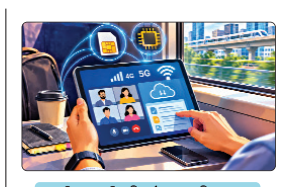
टचस्क्रीन और स्टाइलस

यहां टैबलेट लैपटॉप से एक कदम आगे निकल जाता है. उंगली से टैप करना, पन्ने पलटना, तस्वीरें बदलना सब सहज लगता है. स्टाइलस यानी डिजिटल पेन हाथ में हो तो हाथ से नोट्स लिखना, दस्तावेजों पर निशान लगाना, स्केच और डिजाइन बनाना भी संभव है.



हल्का वजन, लंबी बैटरी

टैबलेट लैपटॉप से हल्का और पतला होता है. कई मॉडल की बैटरी लंबी चलती है, इसलिए पढ़ाई, इंटरनेट और वीडियो कॉल के बीच बार-बार चार्जर ढूंढना नहीं पड़ता. छोटे यूएसबी-सी चार्जर या पावर बैंक से भी चार्ज हो जाता है, जो ट्रेन या कैफे में काम आ सकता है.



वाई-फाई की मोहताजी खत्म

कुछ टैबलेट में 4जी या 5जी, सिम या ई-सिम के साथ मिलता है. यानी न वाई-फाई खोजने की झंझट, न मोबाइल हॉटस्पॉट की. सफर में ऑनलाइन मीटिंग, फाइल भेजना और क्लाउड पर रखे दस्तावेज खोलना आसान हो जाता है.

मन का कोना

सुबह का समय है. सड़क खाली है. मन कह रहा है कि आज का दिन अच्छा जाएगा. तभी एक गाड़ी स्टॉप साइन तोड़कर आपके दरवाजे में आ घुसती है. बच जाने के बाद पहला ख्याल आता है, 'ये कैसी किस्मत है!' पर किस्मत अच्छी थी कि आप बच गए, या खराब कि गाड़ी कबाड़ में गई? जवाब इस पर टिका है कि आप खुद को किस नजर से देखते हैं. मनोविज्ञान की प्रोफेसर डॉ. ब्लैचली के अनुसार, आसपास की गतिविधियों पर ध्यान देने से हमारा दिमाग परिस्थितियों का बेहतर अनुमान लगा सकता है. किस्मत पर हमारा नियंत्रण भले न हो, लेकिन परिस्थितियों को समझकर सही कदम उठाना जरूर हमारे हाथ में है.

हम किस्मत पर यकीन क्यों करते हैं?

डॉ. ब्लैचली के अनुसार, हमारा दिमाग हर घटना में कोई न कोई पैटर्न खोजता है. इससे हमें अनिश्चित परिस्थितियों को समझने और उन पर नियंत्रण होने का अहसास मिलता है. यही वजह है कि लोग शुभ वस्तुएं साथ रखते हैं या किसी खास दिन को अपने लिए भाग्यशाली मानते हैं. माइंडफुलनेस शिक्षक स्टीवन हिक के अनुसार, हर अनुभव को अच्छा या बुरा कहना दिमाग की स्वाभाविक आदत है. लेकिन जीवन की हर घटना को इन दो खानों में नहीं बांटा जा सकता.

माइंडफुलनेस का अभ्यास कैसे करें?

माइंडफुलनेस का अर्थ है वर्तमान पल में जो हो रहा है, उस पर सजग रहना. इसे रोज पांच से दस मिनट देकर आसानी से आजमाया जा सकता है.

1. **सांसों पर ध्यान दें:** किसी शांत जगह बैठें. आंखें बंद कर लें और महसूस करें कि हवा नाक से भीतर जा रही है और बाहर आ रही है. सांस को बदलने की कोशिश न करें, बस उस पर ध्यान दें.
2. **विचारों को पहचानें:** मन में कोई चिंता, डर या पुरानी बात आए तो उसे रोकें नहीं. बस पहचानें कि यह एक विचार है. मन ही मन कहें, 'यह चिंता है' या 'यह एक याद है.'
3. **विचारों को गुजरने दें:** किसी विचार से उलझें नहीं और न ही उसे जबरदस्ती मन से निकालें. उसे ऐसे देखें जैसे सड़क पर गाड़ियां आती हैं और आगे निकल जाती हैं. विचारों को भी आने और जाने दें.
4. **प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें:** दिन में कभी गुस्सा, डर या बेचैनी महसूस हो तो तुरंत प्रतिक्रिया न दें. कुछ पल रुकें, सांसों पर ध्यान दें और फिर सोच-समझकर अगला कदम उठाएं. यही सजगता का अभ्यास है. इसे 'चॉइसलेस अवेयरनेस' कहते हैं. इसमें मन में उठने वाले विचारों, भावनाओं और आसपास की आवाजों को बिना अच्छा-बुरा ठहराए देखना होता है.

